सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

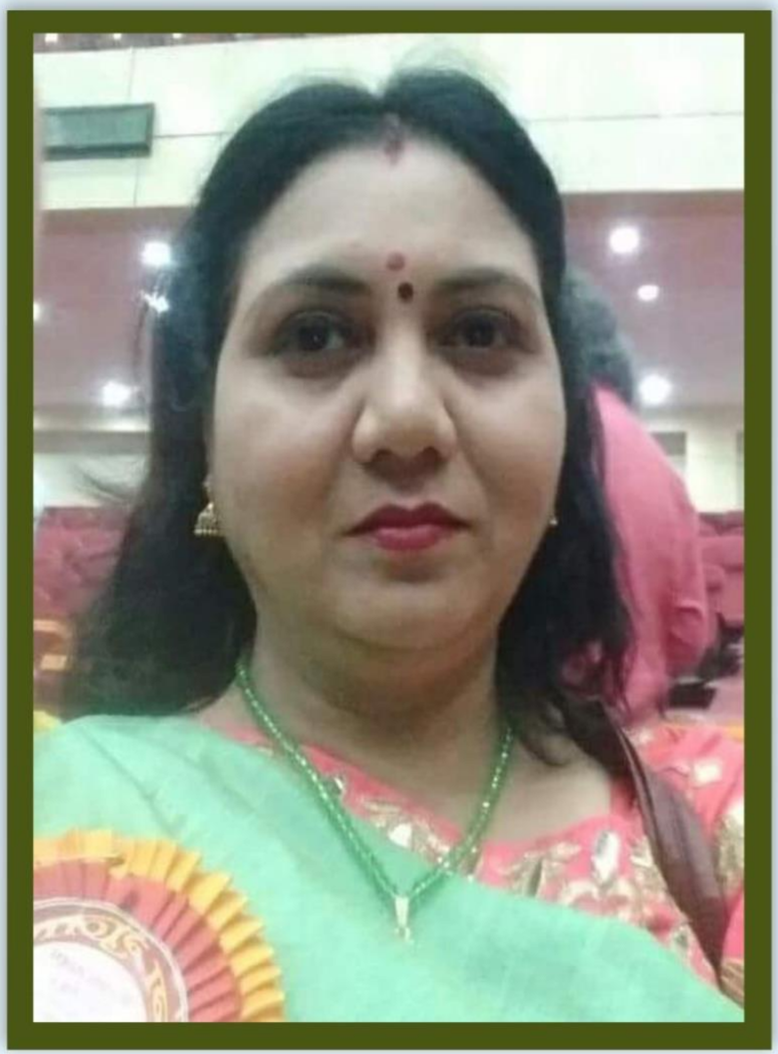

केन्द्रीय रचनाकार

● नमिता दुबे

सृजक-सृजन-समीक्षा

नमिता दुबे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत "सृजक"
नमिता दुबे का परिचय

नाम : नमिता दुबे

जन्मतिथि : 24नवम्बर 1970 आगरा

शिक्षा : एम ए समाजशास्त्र

विधा : कविता ,लघुकथा ,कहानी ,लेख

मोबाईल /व्हाट्सअप :9700850016

ईमेल : namitaavnishdubey@yahoo.com

आत्मकथ्य

मेरे परिवार में किसी को भी साहित्य में रूची नहीं थी | पर मैग्जीन बहुत आतीं थी | हम बच्चे थे हमारे लिये चंपक ,चंदामामा ,नंदन लोटपोट और अन्य कॉमिक्स भी आती थीं| धीरे धीरे पढ़ना आदत में आता गया | बडे हुये तो बडों की मैग्जीनस पढ़नें लगे | गृहशोभा ,गृहलक्ष्मी,मनोरमा सरिता ,वनिता ,मेरी सहेली फेमिना इत्यादि पढ़नें लगे | इधर पढाई भी बढ़ गई और पढ़नें में रूची भी | उपन्यास पढ़नें शुरू किये | 12वीं में मेडिकल का एग्जाम दिया सलेक्शन नहीं हुआ| ट्रेक चेंज कर बीए फिर एम ए किया फिर डीबीएम किया | जॉब लग गई | शाम को अपनी फ्रेन्ड के साथ एल एल वी ज्वाईन कर लिया | ना लिखना ना पढ़ना कोई टाईम नहीं | कभी कभार कुछ लिखा और भेजा तो छप गया पैसा मिला | मधुरिमा में मेरी काफी रचनायें छपी हैं पर जॉब के साथ कानून की पढाई धीरे धीरे शौक पीछे छूट गये | इसी दौरान मेरी सगाई हुई और पांच फरबरी को शादी हो गई | प्रथम वर्ष क्लीयर हो गया | द्वितीय वर्ष की पढाई कर ली पर 22अप्रेल को पहला पेपर था | मुझे लेबरपेन स्टार्ट हो गये | कॉलेज से हॉस्पीटल पहुंचनें में टाईम लगा | जुड़वा बच्चे थे केस बिगड़ गया | बेटी को मुश्किल से बचाया गया | बेटा एक्सपायर हो गया | जिन्दगीं नें बडी़ अजीब परीक्षा ली | धीरे धीरे बेटी बडी़ हुई |दूसरी बेटी आई | परिवार में ही मजा आने लगा | वैसे भी साउथ में बिल्कुल अकेले थे हम लोग | बच्चे बडे हो गये बडी़ बेटी बीटेक फायनल में ,छोटी 12वीं में है | अब बच्चों के कहनें से फिर लिखना शुरू किया | पढ़ती तो रहती थी लिखनें का ख्याल नहीं आया | बडी़ बेटी मेरा लिखा जमा करती थी | एक दिन उसनें कादम्बिनी क्लब ज्वाईन करवा दिया | क से कविता भी गये | विभिन्न ग्रुप में शामिल हुये | और अब आपके सामनें हूं| एक साल हो गया लिखते हुये |

नमिता दुबे

"सृजक का सृजन"

मैं कौन हूं

मैं खुद को पहचान ना पाया
माया तेरी जान ना पाया
कौन हूं मैं ! बता दो मुझको
जगत की रीत अपना ना पाया |

छल बल का राज देख कर
इन्सान के अन्दर पिशाच देखकर
तेरी माया सरताज देख कर
भ्रमित मन राज जान ना पाया |

बाहरी दुनिया में खोजा
आकर्षण बहुतेरे मिले
मन भटका दिल बहका
पर सच जान ना पाया |

क्यों आया क्या करना है
पथ कौन सा पकड़ना है
कर्म है पूजा जानता हूं पर
लकीरों की भाषा समझ न पाया|

मिले दो राहें ,चौराहें अनेक
किस ओर चलूं सोच ना पाया
अनजान पथ बढ़ता गया
अनुकूल परिवेश गढ़ ना पाया |

बचपन बीता यौवन हो रहा विदा
जो मिला अपनाता गया
आज सोचता खाली मुट्ठी
मन संशकित संतोष ना पाया |

अब सवाल ये सामनें खडा़
क्या यही नियति जो मैं जिया
बदल सकता था कर्म की भाषा
पर ! निर्णय समय पर ले ना
पाया|

माना मैंनें जीवन एक पडाव है
जाना कहां नहीं है पता
कुछ कर्म कुछ प्रारब्ध का खेल
लेखनी की भाषा समझ ना पाया|

मिला जो वो स्वीकारा
अपनाया मन से या किस्मत से
पर आया क्यूं ? क्या था मकसद
आज तलक जान ना पाया |

मैं हूं कौन ये शरीर मेरा है
शरीर में मैं हूं पर मैं हूं कौन
सवाल यक्ष बन खडा़ है
सत्य कोई बता ना पाया |

माया की दुनियां मैंनें माना
पर बुद्धि का भी है पैमाना
मारीचिका की भूल भूलैया
धुंध के पार देख ना पाया |

सोचता हूं क्यूं आया
अब जाना है सब छोड़ कर
समय की बहती धारा में
अपना ठिकाना क्षणिक ही पाया |

रंगमंच पर अभिनय करते
सभी अपना किरदार निभाते
डोरी बंधी अनजान हाथों में
सत्य यही कोई समझ ना पाया |

मैं को हटाया तो आवरण हटा
कौन हूं पर मैं ठिठक ठहरा
मैं चेतना और पदार्थ का मेल...
बस यही थोडा़ समझ पाया |

तुम ही थी

हां वो तुम ही थी
सामने पहाड़ से धीरे धीरे उतरते हुये
सधे कदमों से धरा की ओर बढ़ते हुये

देख रहा था तुमको मैं
अपलक एक टक
शायद मेरी निगाहों कें ताप से
अचकचा तुमनें मेरी ओर देखा
और निगाहें झुका कर चलीं गईं तुम ....

मैं हतप्रभ था ..
अपनें अन्दर इतना उत्साह ,उमंग और जोश ...
लम्बे समय से अनुभव ही नहीं किया ...
आज मैंनें हर काम पूर्ण उत्साह से निपटाया ...
बॉस खुश ...ऑफिस वाले खुश
फिर सुबह तुम्हारा इंतजार वहीं पार्क में ...
तुम उसी तरह उछलते कूदतें पहाड़ उतर रहीं थी

पर आज तुम मेरी मौजुदगी से अनजान ना थीं ...
कई बार निगाहें उठा कर देखा था
और चलीं गई...
रोज का सिलसिला बन गया
काम अच्छा होनें से
मेरा प्रमोशन हो गया ...

अब मैं तुम्हारे बारे में गंभीर था ..

आज सोच के बैठा था, तुमसे बात करूंगा ....
पर तुम ना आईं ....
सप्ताह गुजर गया ....

पार्क में मौजुद लोगों से पूछा
पता चला तुम सामनें की कालॉनी में रहती हो ....
पूछते पूछते तुम्हारे घर की दहलीज पर पहुँच गया ...
हिम्मत कर दरवाजा खटखटाया
तुम्हारी माँ थी...

अन्दर बैठाया, पानी दिया
जब मैंनें तुम्हारें बारे में पूछा तो चौंक गईं वो ....
एक बन्द कमरे को खोल कर अन्दर ले गईं ...
ये क्या? तुम तस्वीर में ....

पता चला तुम तो कुछ साल पहले ही दुनियाँ छोड़ गईं थीं ...
मैं समझ नहीं पा रहा था ये सब क्या था ....
तकदीर का कौन सा खेल है ...??
मुझे विदेश जानें का आर्डर मिल चुका था ....

बस यूं ही मैं सामनें पार्क में बैठ गया
और ये क्या तुम पहाड़ उतर रहीं थीं वैसे ही ....जैसे उतरा करती थीं .....

तुम्हारी मम्मी वॉक कर रहीं थी
मैं उन्हें देख चिल्लाया ...
देखों आंटी वो" सुमी "
लोग मुझे पागल समझ रहे थे
तुम मेरे सिवा किसी को नजर नहीं आ रहीं थीं ...
कौन थी तुम मेरी???

बूंद

मैं एक बूंद जल की पिया;
तुम सागर विशाल हो |
नदियां पोखर या हो
ताल तलैया कोई ,
प्यास बुझाना
बहते रहना
यही मेरी कहानी है |
किसी भी आकार में
ढल जाना फितरत मेरी |

जब तक ना मिलूं
पिया, समुद्र तुझमें;
बहते जाना
तलाश कर राहें बढते जाना,
यही फितरत मेरी है|
मुझे जरूरत नहीं,
किसी मार्गदर्शक की
अपनी राहें चुन
चलती जाती हूं|

माना राहें बडी जटिल है मिलती;
कहीं कंटक, कहीं रेत,
कहीं पर पडाड़ मिलते;
बांध बना बांध लेते मानव
पर मेरी फितरत में है
बढते जाना ...बढते जाना|
मेरी छटपटाहट,
मेरी अकुलाहट
ना समझे कोई!

पिया मिलन की तडप लिये
बस चलते जाना |
कितनों के रोजगार
मुझी से चलते है,
जानें कितनें जीवन
मुझमें पलते है |
प्रिय की आस में दर्द भुला सारे
तोड़ बंध मैं बहती हूं,
साजन मैं तुझसे प्यार करती हूं |

तेरे मिलन की प्यास
युगों-युगों तडपाती है
तब जा कर तेरी
अतुल्य जलराशी
मेरा भार उठाती है |
अभिनन्दन करती तेरी बांहें पिया,
भूल जाती हूं
वजूद स्वयं का
घुल मिल तुझमें|

खारा जल बन
बहनें लगती हूं
और सूरज की तपन में
बन वाष्प
बादलों में पहूँचती हूं|
दूर हो तुझसे सजन
फिर बावरी सी फिरती हूं,
बन बारिश बरस
फिर तेरी ओर दौड़ती हूं|

व्याकुल हृदय लिये
सफर अनन्त करती हूं,
तब जा कर पिया
तेरी बाँहें मिलती हैं|
मैं एक बूंद जल की पिया;
तुम सागर विशाल हो |

दर्द

जो कभी कहा नहीं,
किसी नें सुना नहीं;
गम उसी का सालता है,
वही दर्द बन बहता है|

मन की पर्तो के भीतर,
एक अनजान सी दुनियाँ बसती है|
जब खुल जाये एक भी कोना,
अधीरता बह निकलती है|

यत्न से सहेजी दुनियाँ
सिर्फ मुझी को दिखती है,
सबको तो हँसता खेलता
सिर्फ ये किरदार नजर आता है|

मन की विस्मृत गलियों में
जानें से मैं घबराती हूं,
पर एक बार चली गई तो
वापस लौट नहीं पाती हूं|

ना जानें कितनें तीरों से
घायल ह्रदय रहता है,
देख सकता नहीं कोई
इस संसार से जुदा, दूजा संसार
वहां पर बसता है|

सुनों ! तुम चलोगे मेरे साथ?
उन गलियों की खाक छानेंगें,
छुप कर यौवन और बचपन को
हम देखेंगे!

हाथ पकड़ ले आना वापस मुझे,
फिर 'आज' में आ जायेंगे|

अकेले जाती हूं तो,
पकड़ बैठा लेती है यादें;
तुम्हारे साथ सिर्फ
देख उन्हें लौट आना है |

तुम्हें समय की भूलभूलैया में
भटकना इतना पसन्द नहीं ?
चलों !! कोई शिकवा नहीं!

मैं हर किरदार जी लेती हूं,
बीच-बीच में भूली बिसरी
हर याद को जगा बहलाती हूं
और हँस कर गले मिल उन्हें,
विदा भी कर देती हूं|

अचम्भित ना हो प्रिये
औरत हूं .....
एक साथ कई किरदार
जीना अपनें आप
सीख जाती हूं ....

रात

हर रोज आती है रात थकी मांदी
और दे जाती है यातनायें जागनें की!
दिन तो गुजर जाता है भागते हुये,
पर चली आती है संध्या
जानें कितनें उलाहनें लिये|

मैं पल भर बैठ भी ना पाता हूं;
उभर आता है अन्धेंरें में तेरा अक्श ...
कहना-सुनना बहुत चाहता हूं
पर, जुबां हिलती ही नहीं!

नींद की चाहत में
रात गुजर जाती है ...
रोज तू मेरे पास आती है
छूना चाहता हूं;

पर तुझे छू नहीं सकता
तू हवा बन हाथों से फिसल जाती है ....
तुझे अपना बनाऊंगा, कह कर गया था,
जब लौटा तू आत्महत्या कर चुकीं थी!

क्यों ?? आज तक ना जान पाया;
शराब के नशे में डूबनें लगा,
पर सच कहता हूं मैं सो नहीं पाया|
क्या हुआ था उस रात?
जो तू हर वादा तोड़ चली गई

इन्तजार किये बिना ...

आत्महत्या

"मैं बहुत परेशान हूं, उसनें मुझे छोड दिया| मन कर रहा है आत्महत्या कर लूं "
सुबह-सुबह परेश का फोन पर फिजूल बकवास करना मुझे बहुत अखरा पर दोस्त होने के नाते मैं चुप रहा |

"चल ऑफिस मैं मिलते हैं "

बातों से गमगीन देवदास नजर आने वाला मेरा दोस्त दिलफेंक किस्म का व्यक्ति है| आये दिन उसके नयें अफेयर सबकी चर्चा का विषय होते हैं |
परिवार से दूर रहनें वाला परेश जिंदा दिली से जीता है |

मैं ऑफिस पहुंचा तो बॉस आ चुके थे| परेश से बात करना सम्भव नहीं था| मैंनें उसे फोन पर मैसेज किया, 'लंच में कैन्टीन में मिलो' |

जबाव आया 'ओ के'|

लंच में जब मैं कैन्टीन पहुंचा तो परेश किसी लडकी से घुलमिल कर बात कर रहा था|

मेरी सवालिया नजर को ताड़ कर बोला, "मुवुल ...इनसे मिलों मेरे दोस्त सोजन"|

उसनें हाथ जोड़ कर नमस्ते की मैंनें भी शिष्टातार वश हाथ जोड लिये |

"ये हैं मुवल आज ही कलकत्ता से आईं हैं, हमारी कम्पनी में फायनेन्स ऑफिसर हैं "|

सुबह की किसी भी बात का परेश पर कोई असर नहीं था| वो अपनी नईं कथित गर्लफ्रेन्ड़ के साथ एक बार फिर नयें सपनें सजानें लगा था| शायद कुछ दिनों का टाईम पास|

आत्मसम्मान

"अरे, ओ कलमुंही! कहां मर गई? एक गिलास पानी तो पिला दे, ना जानें कहां छुप कर बैठ जाती है"|

दादी की गरजती आवाज सुन

काम वाली बाई को काम समझा कर सुक्की तुरन्त पानी ले कर दादी के पास आई|

पर दादी को चैन कहां, बस बोलना है और वो भी अनर्गल|

सुक्की फिर जा कर काम देखने लगी| दादी ने फिर चिल्लाना शुरू कर दिया पर वो अनदेखा करके काम पूरे करवाती रही |

ये दादी का रोज का नियम था | सारे काम करवाने के बाद उसनें खाना बनाया, दादी के पास आ उन्हें खिलानें लगी| यहां वो घर की केयरटेकर थी और खाना भी बनाती थी|

सुबह सात से रात आठ तक रहती है| महीने का दस हजार मिलता है और तीज त्यौहार पर इनाम, कपडे, मिठाई सब | घर अच्छे से चल जाता है|

दसवी पास सुक्की पहले एक कम्पनी में रिशेप्सनिस्ट का काम करती थी| सब सही चल रहा था पर बडे मालिक बीमार हुये तो उनका बेटा, जो दूसरे ऑफिस में बैठता था आने लगा और उसने सुन्दर-सुशील सुक्की से कुछ और उम्मीदें लगा ली|

पहले तो सुक्की अपनें काम का हिस्सा समझ, कुछ ना बोली पर जब एक रात पूरे स्टाफ के जाने के बाद उसने सुक्की से जबरदस्ती करनी चाही तो स्वयं को बचा वो भाग आई|

नयी नौकरी इतनी आसानी से नहीं मिलती| किसी ने ये घर बताया कि बूढी दादी, बहू-बेटे के ऑफिस और पोते के स्कूल जानें के बाद, अकेली हो जाती हैं| केयर टेकर के रूप में घर सम्हालना है|

पहले तो हिचक थी पर दादी और उनके परिवार से मिल कर वो काम करने के लिये तैयार हो गई| अब पूरा घर वही सम्हालती है, सुबह नाश्ता, दोनो समय खाना भी यहीं खाती है| बहुत इज्जत मिलती है| मालिक-मालकिन बहन जैसा स्नेह देते हैं|

आत्मसम्मान से सर उठा कर जी रही है | बिना स्वयं की नजरों में गिरे हुये |

"सृजन की समीक्षा"

1.

अंतरा-शब्दशक्ति परिवार को मेरा सादर अभिवादन,. आदरणीया नमिता दुबे जी को **मेरा नमस्कार,...**

उम्र और परिचय, आत्मकथ्य, सब कुछ मेरे दिल के बहुत बहुत करीब है, ऐसा लग रहा है कि बस हम एक जैसे ही हैं। आपकी पहली रचना **मैं कौन हूं**, आत्म मंथन है, बहुत उम्दा सोच है, बेहतरीन रचना है। दूसरी रचना **तुम ही थी** , बहुत सुंदर प्रस्तुति है, तीसरी रचना **बूंद** बहुत ही सुन्दर रचना है, बेहतरीन संवाद है, **दर्द**, ग़ज़ब की रचना है, आप भावनाओं को व्यक्त करने में पूरी तरह से सफल हैं, आपकी कविताएं पढ़ते हुए कहानी फिल्म के समान चलती जाती है। **रात**, बहुत सुंदर रचना, **आत्महत्या**, ग़ज़ब का चित्र उकेरा है वास्तविकता का, **आत्मसम्मान**, बहुत सुंदर लघुकथा है। आपके अच्छे स्वास्थ्य और उज्जवल भविष्य की कामना करती हूं। **मंगलकामनाएं,...**

पिंकी परुथी"अनामिका"

2.

आदरणीया नमिता जी

सादर वन्दे,,

सब से पहले तो आप को बहुत बधाइयाँ की आप का चयन केंद्रीय रचनाकार के रूप में हुआ और हमें भी सौभाग्य प्राप्त हुआ कि आप की रचनाओं का रसपान कर सके।

आप का आत्मकथ्य पढ़ा, अच्छा लगा, इतना जरूर समझ आया कि अच्छे लेखन के लिए खूब पढ़ना बहुत जरूरी है, और आप के लेखन में साफ झलकता है कि आप ने इतना कुछ पढ़ा है आप की रचनाओं में वो परिपक्वता झलकती है।

जिंदगी को बखूबी निभाते हुए अब आप ने फिर से कलम का साथ पकड़ा, प्रार्थना करता हूँ कि अब ये साथ अविरत चलता रहे।

मैं कौन हूं,,लाजवाब रचना जो खुद को कठघरे में ला कर खड़ा कर सोचने को मजबूर करती है कि मैं कौन हूं,,और अंत बहुत अच्छा कि,, मैं चेतना और पदार्थ का मेल

तुम ही थी,,व्वाह व्वाह, गज़ब का धारा प्रवाह है इस रचना में,,आगे बढ़ता गया तो उत्सुकता और बढ़ती गयी,,आखिर है कौन?? बहुत ही सधी हुई रचना

बूंद,,खूबसूरत कल्पना और खुद को बूंद और पिया को सागर बता बहुत ही सुंदर अंदाज़ में पिया के लिए त्याग, समर्पण और प्यार पाने की कठिनाई को बखूबी चित्रित किया।

दर्द,,बहुत ही गज़ब की रचना है, सच कहा आप ने की किरदार तो सबको हँसता नज़र आता है लेकिन दिल में जो दर्द की परतें जमा हो रही है वो किसी को नहीं दिखती, ऑड कहीं से एक कोना भी खुल जाए तो,,,बस,,,,
लाजवाब रचना हुई

रात,,व्वाह व्वाह, बेहतरीन रचना है,,जो लाइन दिल को छू गयी वो है, मैं तुझे छूना चाहती हूँ और तू बन के हवा फिसल जाती है,,व्वाह क्या कल्पना शक्ति है आप की,,और अंत तो बहुत ही अच्छा है

आत्महत्या और आत्म सम्मान दोनों ही लघु कहानियां अच्छी और प्रभावी है,पढ़ कर अच्छा लगा

आप को पुनः बहुत बधाइयाँ और उज्जवल भविष्य की कामना के साथ आप यूँ ही अच्छा लिखते रहे,..धन्यवाद

शीतल प्रसाद खंडेलवाल

3.

उत्सवमूर्ति नमिता जी का हार्दिक **अभिनंदन**...
आपका सरल, सहज और प्रभावशाली आत्मकथ्य सत्यता परक और अनुकरणीय है | परिवार, जिम्मेदारीयाँ उसके बाद लेखन बेहतरीन शख्स होने का प्रमाण है |

कविकुल की दीपशिखा को प्रणाम सहित...
आपकी रचनाएं,

मैं कौन हूँ

उत्कृष्ट शब्द चयन व सारगर्भित रचना है

तुम ही थी

बेहतरीन और प्रभावी है.
बस कविताओं में विशेषत: कम लाईनों में यानी कम शब्दों में ज्यादा गहरा कहने का प्रयास करें क्योंकि दो या दो से अधिकबार चरमोत्कर्ष आने लगे तो काव्य का सौन्दर्य कम हो जाता है, पाठक उबना शुरु कर देता हैं|

बूंद

सुन्दर रचना, वही समस्या इस कविता में भी है, बड़ी बहुत है

दर्द

बेहतरीन रचना है

रात

सुन्दर विषय चयन, प्रभावी लेखन

इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएँ भी बेहतर है, बस कविता की लम्बाई का विशेष ध्यान रहें क्योंकि पाठक की रूचि बनी रहें वही सार्थक लेखन है, अन्यथा ढाक के तीन पात, इसी के साथ उन्नति के पथ पर अग्रसर हो, यही कामना है।

डॉ अर्पण जैन 'अविचल'
हिन्दीग्राम

4.

अंतरा परिवार की सदस्य और केंद्रीय रचनाकार के रूप में वंदना दुबे जी की रचनाओं को पढ़ने का सुखद अवसर!
सहज-सरल और सीधा-सादा आत्मकथ्य प्रभावित करता है। **पिता से मिला**

साहित्यिक प्रेम अभिरुचि बन कर लेखन के रूप में विकसित होना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। अब यह आप पर है कि अपनी सक्रियता से इसे निरंतर धार देते जाइए।

मोबाइल युग की यह सबसे बड़ी क्षति है कि इसने हाथ से पत्र लिखने के चलन को समाप्त कर दिया। जो आत्मीयता उन पत्रों में हुआ करती थी, वह मोबाइल के संदेशों में कहाँ? हम रचनाकारों का यह दायित्व तो बनता है कि हम हाथ से लिखे पत्रों के चलन को पुनर्जीवित करने का प्रयास करें।

यादें आती हैं तो अच्छा लगता है, बार-बार आ कर सताती है तो भी मुश्किल... इस भाव को बहुत सुंदरता से व्यक्त किया है।

भटकी तरुणाई.... आज की सबसे बड़ी समस्या... सब उसकी ओर से मौन, अपने में लीन। उतरदायित्व लेने को कोई तैयार नहीं।

कविता हर जगह है... बस देखने की दृष्टि चाहिए... के भाव की सुंदर अभिव्यक्ति है कविता कहाँ अवस्थित है.... में।

माँ के होते हुए सब कितना सुंदर, अनुशासित और प्रेममय होता है यह अच्छी तरह तब पता चलता है जब वे तस्वीर बन जाती हैं।

भावों की अभिव्यक्ति बहुत अच्छे ढंग से रचनाओं में परिलक्षित होती है। लेखन की निरंतरता और अध्ययन की गहराई से कसावट भी आती जाएगी।

उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com